इस्लाम और अहिंसा

पंडित व्यास देव मिश्रा, बैरिस्टर-एट-लॉ, एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट, देहली

अनुवादकः मिर्ज़ा सज्जाद हुसैन

इस्लाम के प्रचार तथा प्रसार में तलवार का नाममात्र का भी योग नहीं था बल्कि इसके फैलाने में इस्लाम की आदर्श शिक्षाओं, उसके अनुपम सिद्धान्तों तथा उसके व्यवहारिक नियमों का ही हाथ था जिसने उस समय लोगों के हृदय में घर कर लिया। लोग सर्वाधिक जिस वस्तु से प्रभावित हुए वह हज़रत मोहम्मद का आदर्श व्यक्तित्व था। कैसा व्यक्तित्व जिसमें सादगी एवं साधारणता कूट-कूट कर भरी थी एवं हज़रत मुहम्मद की सहानुभूतिपूर्ण भावनाएं, मित्र एवं शत्रु दोनों से प्रेम व्यवहार, अल्लाह में पूर्ण आस्था और अपने मिशन के प्रचार में भगीरथ प्रयास- यह ही वे वस्तुएं थीं जिन्होंने इस्लाम की महत्ता तथा विशेषता का सबको प्रशंसक बना दिया तथा हज़रत मुहम्मद के गुणों को प्रत्येक व्यक्ति मानने लगा, इन्हीं वस्तुओं ने, (तलवार ने नहीं) संसार की प्रत्येक कठिनाई पर विजय प्राप्त करके इस्लाम का झंठा लहराया।

--महात्मा गाँधी

हज़रत मुहम्मद का प्रस्तुत किया हुआ धर्म प्राचीनता एवं आधुनिकता का ऐसा सुन्दर मिश्रण एवं सार है जिसको पुरातनकाल के व्यक्ति सोच भी नहीं सकते थे- यही कारण था कि हज़रत मुहम्मद को अपने समय की समस्त कठिनताओं एवं बाधाओं पर विजय हुई और जब उनकी शिक्षाओं ने एक बार हृदय में स्थान बना लिया तो वह दिन प्रतिदिन, महीने-महीने, वर्ष-प्रति वर्ष, शताब्दी-शताब्दी बढ़ने एवं फैलने लगी एवं अत्यधिक उन्नति के पथ पर आरूढ़ हो चुकी है।

--मिस्टर गिबन

इस्लाम के सिद्धान्तों में एक जेहाद भी है जिन्होंने यह सुन लिया वह यह समझने लगे कि इस्लाम तो कठोरता एवं अत्याचार का समर्थक है तथा यह धर्म अपने अनुयायियों को ज़बरदस्ती तथा बलपूर्वक मुसलमान बनाने की शिक्षा देता है फिर हमारे भारत के कुछ मुस्लिम सम्राटों ने अपने अधिपत्य के लिए किए जाने वाले युद्धों का नाम ''जेहाद'' रखकर इस अशुद्ध धारणा को बल प्रदान किया।

परन्तु किसी धर्म के अनुयायियों से उस धर्म के आदेशों, सिद्धान्तों तथा शिक्षाओं का अनुमान लगाना भ्रमपूर्ण एवं अशुद्ध है क्योंकि धर्मानुयायियों के कार्य तथा कर्म-धर्म के विपरीत एवं प्रतिकूल भी हो सकते हैं अतएव किसी धर्म के सिद्धांतों का पता लगाने के लिए उस धर्म का ही ध्यानपूर्वक अध्ययन करना चाहिए।

कोई धर्म अत्याचार व ज़ुल्म का पाठ पढ़ाता है अथवा अहिंसा एवं सदव्यवहार की शिक्षा देता है इसके ज्ञान की दो कसौटियाँ हैं प्रथम तो उस धर्म की पुस्तकों में लिखित आदेश तथा द्वितीय उस धर्म के अधिष्ठाताओं एवं पथ-प्रदर्शकों के कथन एवं व्यवहार। आइये तो इसी कसौटी पर इस्लाम को कसें जिससे ज्ञात हो सके कि इस्लाम हिंसा का समर्थक है अथवा अहिंसा का।

हमारी धर्म-पुस्तक ''क़ुरआन'' है, उसमें स्पष्ट शब्दों में अल्लाह का कथन है कि खुदा झगड़े को पसंद नहीं करता तो यह स्वयं सिद्ध है कि इस्लाम जो अल्लाह का अभीष्ठ धर्म है उसमें क्रूरता, कठोरता, अत्याचार व ज़ुल्म को कब स्थान मिल सकता है जबकि पवित्र क़ुरआन में एक जगह पर यह आदेश है ''ला तुफ़सेदू फ़िल अर्ज़'' अर्थात पृथ्वी पर झगड़ा (फ़साद) दंगा आदि न करो। एक दूसरे स्थान पर अल्लाह का कथन है ''ला इकराहा फ़िद्दीन'' धर्म में कठोरता नहीं है अर्थात तुम

अपने धर्म के प्रचार एवं प्रसारर्थ अपने धर्म की शिक्षाएं, सिद्धान्त एवं नियम दूसरों के सामने प्रस्तुत कर सकते हो बलपूर्वक तथा अत्याचार करके मुसलमान बनाने की छूट तुमको कदापि नहीं है। क़ुरआन के इस आदेश को दृष्टि में रखते हुए यदि कहीं कुछ मुसलमान दूसरे धर्मावलिंबियों पर अत्याचार करके बलपूर्वक मुसलमान बनाते दृष्टिगगोचर हों तथा इसको अपना धार्मिक कर्तव्य समझ रहे हों तो हों परन्तु अल्लाह की दृष्टि में यह पूर्णतया अशुद्ध, दोषपूर्ण एवं दंडनीय कार्य होगा क्योंकि यह क़ुरआन के आदेश के प्रतिकूल है।

एक प्रश्न यह उठता है कि फिर जेहाद का आदेश ही क्यों दिया गया? इसका उत्तर लिखने के पूर्व यह बतला देना आवश्यक प्रतीत होता है कि मनुष्य का कार्य सदा शांति व समझौते से ही सिद्ध नहीं होता अपितु समयानुसार युद्ध आदि की भी आवश्यकता होती है। इस सिद्धान्त पर "यदि तुम्हारे एक गाल पर कोई थप्पड़ मारे तो दूसरा भी बढ़ा दो" कार्य करना उसी समय तक उचित एवं श्रेयस्कार होगा जब तक हमारे विपक्षी एवं विरोधी में इतनी मानवता हो कि वह हमारे इस व्यवहार से लज्जित हो जाए और अपना हाथ रोक ले परन्तु यदि वह हमारे इस व्यवहार से तनिक भी प्रभावित न हो बल्कि इसके विपरीत हिंसा तथा क्रूरता व अत्याचार में और भी वृद्धि कर दे तो उस समय हम ही इस अत्याचार का कारण होंगे अतएव मालूम हुआ कि कभी-कभी युद्ध करना तथा बदला लेना भी हितकर हुआ करता है फिर जबकि इस्लाम तो केवल उत्तर स्वरूप युद्ध का ही आदेश देता है अर्थात जब कोई आक्रमण करे तो अपने प्राणों के सुरक्षार्थ युद्ध करना। इस्लाम ने जेहाद का आदेश अवश्य दिया है परन्तु राज्य व सिंहासन प्राप्ति के कारण नहीं, बलपूर्वक मुसलमान बनाने के हेतु नहीं, अपितु पारस्परिक प्रेम में वृद्धि के कारणार्थ, अत्याचार व जुल्म की समाप्ति के लिए तथा शांति व समझौते की स्थापना ही के लिए जेहाद का आदेश दिया है। पवित्र क़ुरआन में स्पष्ट शब्दों में अल्लाह का कथन है "तुम्हें क्या हो गया है कि तुम युद्ध नहीं करते उन शक्तिहीन पुरुषों, स्त्रियों एवं बालकों के कारण कि जिन्हें कष्ट पहुँचाया जा रहा है और जिनको कोई सहायता प्रदान करने वाला नहीं है।" देखिये यहाँ भी जेहाद का आदेश असहायों की सहायता के लिए है, बलपूर्वक मुसलमान बनाने के लिए नहीं। एक दूसरे स्थान पर है "जेहाद करो जिससे आपस के लड़ाई-झगड़े समाप्त हो जाएं" इस स्थल पर भी जेहाद का ध्येय शांति की स्थापना मात्र ही है, राज्य व सिंहासन की प्राप्ति के लिए युद्ध करने को जेहाद नहीं कहा जा सकता।

अब आइए दूसरी कसौटी पर इस्लाम को कसें अर्थात् यह देखें कि इस्लाम के अधिष्ठाता एवं मार्ग प्रदर्शक इस सम्बन्ध में क्या करते हैं और क्या कहते हैं। इस्लाम धर्म के नेताओं में सर्वप्रथम नाम हज़रत मुहम्मद का आता है जिनके सम्बन्ध में समस्त इतिहासकार लिखते हैं कि अहिंसा की मूर्ति थे तथा अपने शत्रुओं, विपक्षियों एवं विरोधियों से भी सम्बन्धी एवं मित्र का सा व्यवहार करते थे। जब यह ऐतिहासिक तथ्य एवं निर्णय है तो भला यह कैसे सम्भव है कि वह जिस धर्म के संस्थापक एवं प्रचारक हों उसका सिद्धान्त "अत्याचार व जुल्म" तथा "बलपूर्वक मुसलमान" बनाना हो। नहीं ऐसा नहीं है बल्कि आपने अपने धर्म का नाम "इस्लाम" रखा जिसके अर्थ हैं "शांति एवं समझौता" तथा इस्लाम धर्म का अनुयायी "मुस्लिम" तथा "मोमिन" कहलाता है जिसके अर्थ क्रमशः समझौता-प्रेमी एवं शांतिप्रिय के हैं। इससे यह सुस्पष्ट है कि इस्लाम शांति का संस्थापक है। और प्रेम का प्रचारक। हज़रत मुहम्मद के जीवन काल में हमें अनेकों ऐसी घटनाएं मिलती हैं जो अहिंसा के उत्कृष्ठ उदाहरण हैं। जिनमें से कुछ हम अपने पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं।

हज़रत मुहम्मद अपने पैग़म्बर (ईश्वरीय दूत) होने की घोषणा कर चुके हैं तथा "ला इलाहा कहो" यह नारा लगाया जा चुका है। उस समय लगभग समस्त मक्का हज़रत मुहम्मद का शत्रु दृष्टिगोचर होता है। जिस मार्ग से हज़रत मुहम्मद गुज़रते हैं पत्थरों की वर्षा की जाती है, काँटे बिछाये जाते हैं, कूड़ा फेंका जाता है, नमाज़ पढ़ते समय दुर्गन्ध फेंकी जाती है। एक वृद्ध स्त्री ने तो अपना नित्य-कर्म बना लिया था कि जब हज़रत मुहम्मद

उधर से गुज़रते तो वह उन पर कूड़ा फेंका करती, पर आप तनिक भी क्रोधित न होते। एक दिन उसने कूड़ा न फेंका। हज़रत मुहम्मद ने पूछा कि वह वृद्ध स्त्री जो मुझ पर प्रतिदिन कूड़ा फेंका करती है आज कहाँ है और उसने कूड़ा क्यों न फेंका। लोगों ने उत्तर दिया कि वह बीमार है रोग-ग्रस्त है। हज़रत मुहम्मद उसके घर गए। उस वृद्ध-स्त्री ने जब हज़रत मुहम्मद को आते देखा तो कहा कि ऐ मुहम्मद! उस समय बदला लेने आए हो जब मैं बीमार हूँ रोग-ग्रस्त हूँ। हज़रत मुहम्मद ने कहा नहीं मैं तुझे देखने आया हूँ। जब उसने हज़रत मुहम्मद के चरित्र की इस पराकाष्ठा को देखा तो इतना अधिक प्रभावित हुई कि इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।

कहने वाला कह सकता है कि हज़रत मोहम्मद के मक्के में निवास करने वाले समय में उनके अनुयायियों की संख्या बहुत कम थी अतएव वह इस प्रकार का अहिंसापूर्ण व्यवहार करने पर बाध्य थे परन्तु यदि हज़रत मोहम्मद के उस जीवन-काल पर हम दृष्टिपात कर लें जब आपके पास धनाधिक्य भी हो गया था, आपके अनुयायियों की संख्या में भी असाधारण वृद्धि हो गयी थी, आपके पास एक विशाल सेना भी थी परन्तु फिर भी आपने अपने शत्रुओं, विरोधियों एवं विपक्षियों से अहिंसापूर्ण व्यवहार ही किया, उन पर कभी अत्याचार अथवा ज़ुल्म न किया।

इस उपरोक्त कथन की पुष्टि के लिए यह प्रमाण प्रस्तुत किया जाता है कि जब हज़रत मोहम्मद विजयी के रूप में मक्के में प्रवेश कर रहे थे उस समय आपके अनुयायियों एवं साथियों में बदला लेने की भावना प्रज्वलित थी क्योंकि आज उस भूमि पर विजेता के रूप में पदार्पण कर रहे हैं जहाँ से कल अत्यंत निर्दयता के साथ निकाले गये थे। मन में कह रहे हैं कि आज हम अपने शत्रुओं एवं विरोधियों से बदला अवश्य लेंगे। हज़रत मोहम्मद के एक अनुयायी जिनके हाथ में इस्लाम का झंडा है वह यह नारा लगाते हुये आगे बढ़ रहे हैं कि आज बदला लेने का दिन है। यह आवाज़ हज़रत मोहम्मद के कानों तक भी पहुँचती है वह अपने उन अनुयायी को बुलाते हैं कि जिनके हाथ में इस्लामी पताका है और कहते हैं कि इस्लाम जो अहिंसा का प्रचारक है तथा प्रेम-भाव का पाठ पढ़ाता है। उसका झंडा एक ऐसे आदमी के हाथ में कदापि न होना चाहिए जो अपने शत्रुओं पर भी अत्याचार करना चाहता हो। यह कहकर अपने एक दूसरे अनुयायी को बुलाकर झंडा उसे देते हुये कहते हैं कि यह नारा लगाते हुये चलो कि आज हज़रत मोहम्मद की विशिष्ट कृपा-दृष्टि का दिवस है।

केवल इतना ही नहीं बल्कि जब मक्के में प्रवेश करते हैं और आपके शत्रु एवं विरोधी पंक्तिबद्ध क़ैदियों के समान खड़े किये जाते हैं। इनमें वे लोग भी हैं जिन्होंने हज़रत मोहम्मद और उनके सच्चे अनुयायियों को नाना प्रकार के कष्ट पहुँचाये थे, उनके मार्ग में विपत्तियाँ, अड़चनें एवं काँटे बिछाये थे और इतने अधिक कि हज़रत मोहम्मद को हिजरत (मक्के से मदीने को प्रस्थान) पर बाध्य होना पड़ा था। इन क़ैदियों में वह भी हैं जिन्होंने आप से युद्ध किये थे और आपके चचा हज़रत हमज़ा की अत्यंत निर्दयता से हत्या की थी तथा उनके शव का अत्याधिक अपमान किया था। उन सबकी गर्दनें आज लज्जा से झुकी हुई हैं। हज़रत मोहम्मद उन सबसे पूछते हैं बताओ तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाये। उनकी ओर से कोई उत्तर नहीं मिलता है परन्तु उनकी झुकी हुयी गर्दनें जो इस प्रश्न के बाद और झुक गयीं हैं, इस बात की प्रतीक हैं कि मानो वे यह कह रहे हों कि होना तो हमारे साथ वैसा ही व्यवहार चाहिये जैसा हमने आपके साथ किया था अर्थात जो अत्याचार हमने आप और आपके साथियों पर किये थे आप उसका पूरा-पूरा बदला ले सकते हैं परन्तु हज़रत मोहम्मद जैसे कृपा-निधि एवं आदर्श मानव की मानवता का तक़ाज़ा कुछ और था अतएव आपने कहा कि जाओ तुम सब स्वतंत्र हो और तुम लोगों के लिए सर्वत्र शरण-स्थान है तुम्हारी धन-सम्पत्ति पर कोई मुसलमान आधिपत्य न जमायेगा न तुम से छीनेगा।

हज़रत मोहम्मद की इस कृपा-दृष्टि एवं अहिंसा को देखकर लगभग समस्त मक्का निवासी मुसलमान हो जाते हैं। आपने उन लोगों के साथ भी लेश-मात्र भी कठोरता न की जो आपके जीवन-दीप को बुझा देना चाहते थे और जिन्होंने अब विवशतः इस्लाम धर्म का अनुयायी होना स्वीकार किया था।

क्या इन घटनाओं के पढ़ने के बाद भी लोग कहेंगे कि इस्लाम तलवार के बल पर फैला। मैं भी कहता हूँ कि हाँ इस्लाम के प्रचारने बड़ा योग दिया परन्तु जो इस्लाम तलवार के बल पर फैला वह हज़रत मोहम्मद का लाया हुआ न था बल्कि वह था विजेताओं एवं आक्रमणकारी मुसलमानों का इस्लाम। उसे हज़रत मोहम्मद के इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं। हज़रत मोहम्मद का इस्लाम जिस तलवार से फैला वह सत्य, प्रेम व अहिंसा की तलवार थी। वह अधर्मियों को नहीं काटती थी बल्कि अधर्म को समाप्त करती थी तथा मनुष्य की हत्या करने की अपेक्षा उसके अवगुणों का नाश करती थी एवं ज़ुबानों को विजयी करने के बजाए हृदयों पर अपना अधिकार जमाने का यत्न करती थी।

इस्लामी इतिहास के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों में हज़रत मोहम्मद के बाद हज़रत अली का नाम आता है। आपका पवित्र जीवन भी अहिंसा से परिपूर्ण था। हज़रत अली जब युद्ध करते थे तो आप से लड़ने जो भी आता उसके सम्मुख तीन शर्तें रखते। प्रथम तो यह कि यदि वह बिना लड़े ही जाना चाहता है तो उसे यह छूट है कि वह बिना लड़े ही वापस हो जाये। द्वितीय यह कि यदि जाना न चाहे तो इस्लाम को स्वीकार कर ले यदि यह शर्त भी वह स्वीकार न करता तो विवशतः लड़ने पर तैयार हो जाते।

हज़रत मोहम्मद के देहावसान के पश्चात् जब मुसलमानों की समस्त शक्तियाँ एवं विचारधारायें इस्लामी शासन की सीमाओं में वृद्धि करने तथा अन्य देशों पर अपनी विजय पताका लहराने पर केन्द्रित हो गयीं और क़ुरआन के आदेशों तथा हज़रत मोहम्मद के कथनों एवं शिक्षाओं के विपरीत अत्याचार से काम लिया जाने लगा तथा पड़ोसी देशों पर चढ़ाईयां की जाने लगीं तो उस समय भी हज़रत अली वास्तविक इस्लाम का सच्चा रूप जन-साधारण के सम्मुख रखने में संलग्न थे। दूसरे मुसलमान देशों को विजय करके इस्लामी राज्य के विस्तार करने में लगे हुये थे तथा वह अपने अत्याचारपूर्ण व्यवहार से ऐसे प्रमाण प्रस्तुत कर रहे थे जिससे लोग मुसलमानों को विजेता, अत्याचारी, क्रूर, शांति भंग करने वाला, लुटेरा आदि समझने लगें तथा उनके हृदय में मुसलमानों की ओर से उस प्रकार की घृणा उत्पन्न हो जाये जो एक पराजित देश को विजयी देश के साथ स्वतः उत्पन्न हो जाती है परन्तु उस समय भी हज़रत अली अपने आदर्श चरित्र एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्व द्वारा उन पराजित देशों के निवासियों के हृदयों पर अधिकार जमा रहे थे जिसमें हिंसा का कहीं नाम न था।

हज़रत अली ने विश्व के सम्मुख एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत कर दिया कि देश किस प्रकार विजय किये जाते हैं हज़रत अली ने यमन नामक देश पर विजय प्राप्त कर ली परन्तु वहाँ की भूमि पर एक बूँद रक्त की न गिरी न वहाँ कमानों की कड़क, नैज़ों (भालों) की लचक और तलवारों की चमक दृष्टिगोचर हुयी परन्तु समस्त देश आपका अनुयायी हो गया जिसका कारण केवल यह था कि आपने अत्याचार, कठोरता एवं तलवार के प्रयोग की अपेक्षा प्रेम-भाव, चरित्र की पराकाष्ठा, तथा नम्रता से हृदयों को मोहने का सफ़ल कार्य किया था। क्या इतिहास किसी देश को विजय करने में अहिंसा का ऐसा उत्कृष्ठ उदाहरण पेश कर सकता है।

और यदि इससे बढ़कर और श्रेष्ठ अहिंसा का उदाहरण देखना है तो आइये रमज़ान (वह पवित्र महीना जिसमें रोज़े (व्रत) रखे जाते हैं) की अट्ठारह तारीख़ को कूफ़े (एक नगर का नाम) की मस्जिद में हज़रत अली के सर पर क़ातिल की तलवार लग चुकी है, इस बुरी तरह घायल हुये हैं कि बचने की कोई आशा शेष नहीं रह गयी है। लोग क़ातिल को गिरफ़्तार करके लाते हैं। मुश्कें कसी हुयी हैं परन्तु क्या कहना हज़रत अली की दया व कृपा के अपार समुन्द्र का कि आप फ़रमाते हैं कि इसकी मुश्कें खोल दो और देखो इसको प्यास बहुत लगी मालूम होती है। अतएव मेरे लिए जो शरबत लाया गया है पहले इसको पिला दो। कोटि-कोटि प्रणाम हो ऐसी अहिंसा की मूर्ति एवं दया के निधि धार्मिक अधिष्ठाता पर जिसका व्यवहार शत्रु एवं क़ातिल के साथ भी सम्बन्धी एवं मित्र का जैसा हो। वह है इस्लाम की शिक्षा, इसका नाम है अहिंसा।

हज़रत इमाम हुसैन (कर्बला के अमर शहीद) के जीवन में भी हमें अहिंसा एवं अपार प्रेम के अनेकों उदाहरण मिलते हैं। जब आप कर्बला की ओर जा रहे

थे और मार्ग में थे। उस समय हुर (हुसैन का एक शत्रु जो बाद में इमाम हुसैन की ओर आ गया और आपके प्राणों की रक्षा करते हुए शहीद हुआ) की सेना जो केवल इस कारण आयी थी कि इमाम हुसैन को आगे न बढ़ने दिया जाये वह भी जब पानी माँगती है तो हुसैन अपने इस शत्रु सेना को भी अरब के जलशून्य मार्गों में अपने बालकों एवं स्त्रियों का विचार किये बिना सारा पानी पिता देते हैं।

कर्बला के रण-क्षेत्र में लड़ते-लड़ते घावों एवं प्रहारों से चूर होकर जब भूमि पर गिरते हैं तथा परम पिता परमेश्वर के आगे शीश को भूमि पर टिका देते हैं। शिम्र (जिसने आप का गला काटा था) यह समझता है कि इमाम हुसैन हम लोगों के लिए अमंगल कामनायें कर रहे होंगे परन्तु जब कान लगा कर सुनता है तो हुसैन कह रहे थे कि हे अल्लाह! मेरे नाना (हज़रत मोहम्मद के अनुयायी) बहुत पापी हैं तू इनके पापों को क्षमा कर दे। कठिनाईयों एवं विपत्तियों के साम्राज्य में कठिनाईयाँ पहुँचाने वालों के लिए ही मंगल कामना करना यह है अहिंसा का अद्वितीय उदाहरण।

इसी प्रकार हमारे दूसरे धार्मिक अधिष्ठाता भी हमें अहिंसा का पाठ पढ़ाते रहे। अन्य धर्म-अधिष्ठाताओं के जीवन-काल से अहिंसा के उज्जवल एवं उत्कृष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने की अपेक्षा केवल इतना लिखने पर ही लेख समाप्त करता हूँ कि इस्लामी इतिहास, धार्मिक अधिष्ठताओं की इन अहिंसापूर्ण घटनाओं से परिपूर्ण है तथा इन्हीं घटनाओं ने महात्मा गाँधी और मिस्टर गिबन जैसे राष्ट्रीय एवं राजनीति के नेताओं को यह लिखने पर बाध्य कर दिया कि इस्लाम के प्रचार तथा प्रसार में तलवार का हाथ नहीं था बल्कि इस्लाम के धार्मिक नेताओं के नैतिक गुणों एवं अहिंसापूर्ण व्यवहारों ने इस्लाम के आगे लोगों के शीश नवा दिये।

शेष..... याद और यादगार

हज़रत अली की पुत्री है जो वैभवशाली राजनीति को पराजित कर रही है। वे जानती हैं कि यह समय की राजनीति का दबाव है जो हम दुखियों का दिल बहलाने पर विवश कर रहा है। आप ने कहा कि मेरी ओर से यज़ीद से कहो कि अभी हम अपने स्वामी को रोए नहीं हैं पहले एक घर ख़ाली करा दे कि हम अपने सम्बन्धियों को रो लें। फिर बताएंगे कि हब हम यहाँ रहेंगे या मदीने वापस जाएंगे।

लीजिए हुसैन का मातम करने वालों की पंक्ति बैठ गई अब जो समाचार मिला कि हुसैन का मातम उनके सम्बन्धी कर रहे हैं तो शोकपूर्ण वस्त्र पहन कर कुरैश के परिवार की भद्र स्त्रियाँ आईं वस्तुतः हज़रत ज़ैनब ने इस पंक्ति के साथ सहस्त्रों हृदय में हज़रत इमाम हुसैन के मातम की पंक्ति बिठा दी। हम सब भी आज ज़ैनब की बिठाई हुई पंक्ति पर हैं।

अब कौन बता सकता है कि इस प्रभाव को कि ''लैला'' की ज़बान और अली अकबर का मातम, हसन की विधवा की ज़बान और क़ासिम का व्याख्यान, ज़ैनब की ज़बान और हुसैन का मर्सिया, रबाब की ज़बान और अली असग़र का नौहा और फिर तो हज़रत ज़ैनब ने सीमा स्थापित कर दी आप सब को अनुभव है कि अन्तिम में पढ़ने वाले के व्याख्यान के पश्चात जब आकृतियाँ आती हैं तो क्या प्रभाव होता है, यद्यपि कि उन आकृतियों में क्या होता है? एक ताबूत जिसमें शव कोई नहीं, एक झूला जिसमें बच्चा कोई नहीं उपस्थित, एक दुल-दुल जिस पर कोई सवार नहीं। इससे क्या हाहाकार होती है- और वहाँ हज़रत ज़ैनब कहती हैं कि यज़ीद से कहो कि जहाँ इतना किया है हमारे सम्बन्धियों के कटे हुए शीश भी भेज दे- लीजिए मातम करने वाले पंक्ति बाँधे खड़े हैं, और अटठारह शीश लाए जाते हैं, हाय हुसैन! हाय अब्बास! हाय अली अकबर!!!

(इमामिया मिशन लखनऊ प्रकाशन न० 515
मुहर्रम 1387[हि०]/अप्रैल 1967[ई०])